मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद ('विकल्प') पर आधारितः

चेतना विकास मूल्य शिक्षाः एक संक्षिप्त परिचय

-श्रीराम नरसिम्हन, मानव मंदिर, कानपुर

1) पृष्ठभूमीः ('विकल्प कैसे आया? क्या है?)

श्री अग्रहार नाग्राज्जी द्वारा अस्तित्व में अनुसंधान, जिसका संक्षिप्त उल्लेख 'विकल्प' नामक लेख मे दिया है।

इस अनुसन्धान का फलनः मानव एवं अस्तित्व (ब्रह्माण्ड) से जुड़े सभी प्रश्नों का उत्तर - सीधे अस्तित्व में, से पाया गया है, अनुभव किया गया। इससे समस्त मानव जाति का सुख-शान्ति पूर्वक जीने, मानवीय प्रयोजन एवं लक्ष्य, शिक्षा, संविधान, आचरण एवं व्यवस्था का स्पष्ट सार्वभौम स्वरुप उभर कर आया है।

<u>मुख्य प्रतिपादनः</u> अस्तित्व स्वयं सहअस्तित्व हैं, सामरस्यता में है, संगीत में है। अस्तित्व (जो भी है) में प्रत्येक इकाई स्वयं व्यवस्था में है, एवं अपने से बड़ी (समग्र) व्यवस्था में भागीदार है। इस धरती पर मानव मात्र स्वयं भी व्यवस्था में नहीं हैं, एवं बड़ी व्यवस्था में भागीदारी भी कर नहीं पा रहा है। इसका कारण अज्ञान अथवा 'भ्रम' ही है, यही मानव का 'अजागृत' अवस्था, जिसे 'जीव-चेतना' संज्ञा दी गयी है| अर्थात, समझ अथवा ज्ञान का अभाव ही हमारे समस्त समस्याओं का कारण है| सही समझ, अथवा ज्ञान पूर्वक ही मानव व्यवस्थित होकर जी सकता है। यही 'जागृति' है। ऐसे ज्ञान संपन्न, 'जागृत' होना मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद (विकल्प) के अध्ययन के द्वारा संभव है, जो 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' नाम से शिक्षा की वस्तु के रूप में प्रस्तावित है।

इस प्रस्ताव को कई विचारशील, चिंतनशील एवं जन सामान्य लोगों ने पिछले १५-२० वर्षों में गंभीरता पूर्वक अध्ययन किया है, समझा है, स्वयं जिया है, एवं प्रयोग एवं अभ्यास में लाया है, ला रहे हैं। इस समझ के रोशनी में मानव समाज से जुड़े बहुआयामी समस्याओं का समाधान संभव है - इसके प्रमाणपूत विश्वास एवं आशा के बल पर आपके सम्मुख, समस्त मानव जाति के सम्मुख इस प्रस्ताव को रखना उचित समझा गया।

2) वर्तमान शिक्षा में विकल्प की आवश्यकता (विकल्प क्यों)

समस्या एवं समाधान की आवश्यकता:

आज के मानव जाति के सम्मुख समस्याएं जैसे : व्यक्ति में तनाव, परिवारों में टूटन, समाज में आतंक, भ्रष्टाचार, प्राकृतिक असंतुलन, इत्यादी सर्व विदित है। वर्तमान में मानव में पाई जाने वाली सामाजिक (धार्मिक) ,आर्थिक एवं राज्यनैतिक विषमताएं ही समरोंमुखता है। धरती संतुलित रहना, ऋतु संतुलन बना रहना, धरती पर मानव का अक्षुण्ण रहना, मानव समाज सुख-शांती पूर्वक जीना आवश्यकता के रूप में सभी व्यक्ति, देशों को अपेक्षा के रूप में स्वीकृत है ही ।

समाधान के लिए शिक्षा की उपादेयता:

प्रकृति को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण प्रकृति चार 'अवस्थाओं' में गण्य है: पदार्थ (जैसे मिटटी, पथर, पानी); प्राण (पेड़, पौधे); जीव (पशु, पक्षी) एवं मानव । इनमे से मानव एक मात्र ऐसी इकाई है जो अपने समझ (संस्कार), अथवा मान्यता के अनुसार चलता है।

मानव एक कल्पनाशील एवं कर्मस्वतंत्र इकाई है। मानव ने आज तक जो भी किया है, इस कल्पनाशीलता एवं कर्मस्वतंत्रता के सहारे ही किया । शिक्षा इस कल्पनाशीलता के लिए मार्गदर्शिका के रूप में काम करती है। शिक्षा से ही मानव में समझ, एवं सही जीने की कला सुनिश्चित होती है। वर्तमान में जितने भी समस्याएं दृष्टिगोचर हैं, वह इसी कल्पनाशीलता, समझ, अथवा मान्यता का प्रकाशन है। अतः मानव को, मानव के कल्पनाशीलता को मार्गदर्शन देने का प्रमुख भूमिका शिक्षा का ही है ।

प्रचिलित शिक्षा की स्थिती:

प्रत्येक मानव के जीने के चार आयाम हैं: व्यवसाय, व्यवहार, विचार (इच्छा, विचार, कल्पनाशीलता) एवं अनुभव (समझ) | आज 'व्यवसाय' को ही प्रधान माना जा रहा है| इसी के फलस्वरूप वर्तमान शिक्षा पद्धति में अधिकतम ध्यान सूचना, विश्लेषण एवं हुनर पर दिया जाता हैं, जिसका अंतिम गम्यस्थली धन एवं पद की प्राप्ती है। इससे जीने का कोई स्पष्ट स्वरुप एवं प्रयोजन बनता नहीं । जहां मूल्यों अथवा जीने की कला की बात है, यह किसी धर्म, मत, संप्रदाय के सीमा में होने के कारण सार्वभौम सिद्ध हो नहीं पाती हैं - यह 'विचार', अथवा कल्पनाशीलता के सीमा में गिरफ्त रहता है । उपरोक्त के परिणाम स्वरूप प्रत्येक मानव अपने विचार (कल्पनाशीलता, इच्छा) के अनुरूप कार्य करता है, व्यवहार एवं व्यवसाय में रत है, परिणामस्वरूप अस्पष्टता, एवं समस्त मत-भेद हैं | अनुभव (समझ) का आयाम बिरान पड़ा रहता है| इसी के भरपाई की आवश्यकता है|

इस विधी से शिक्षा में अनुभव (समझ) एवं मूल्यों (भागीदारी, जीने की कला) को समावेश करने हेतु एक सार्वभौम समझ, दृष्टिकोण की अनिवार्यता हृदयंगम होता है। ऐसा समझः

- अस्तित्व मूलक होना चाहिएः यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता पर आधारित हो; (सच्चाई पर, किसी मान्यता के तहत नहीं)
- मानव केंद्रित होना चाहिएः अस्तित्व, एवं प्रकृति में मानव ही दृष्टा, समझने वाली इकाई के रूप में स्पष्ट हो, मानव में जड़ एवं चैतन्य पक्ष - दोनों स्पष्ट हो
- मानव का प्रकृति में प्रयोजन, भागीदारी स्पष्ट करना चाहिएः सार्वभौम मानव लक्ष्य, मानवीय आचरण स्पष्ट करना चाहिएः जो सभी के लिए एक जैसा ही हो, किसी भी मान्यता, मत, के सीमा में न हो

'सहअस्तित्ववादी' विकल्प की चर्चा एवं औचित्यता इसी सन्दर्भ में है।

3) चेतना विकास मूल्य शिक्षाः उद्देश्य (विकल्प का लक्ष्य)

3.1) जीव चेतना से विकसित चेतना (मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना) में गुणात्मक परिवर्तन ही संक्रमण है अर्थात अपरिवर्तनीय विकसित स्तिथि-गति उपलब्धी है।

3.2) ऐसे 'जाग्रति' को प्राप्त करने से सार्वभौम मानव लक्ष्य की पूर्ती होती हैः

- हर व्यक्ति में बौद्धिक समाधान (से सुख)
  - [सही समझ से समाधान, समाधान = सुख]
  - प्रत्येक व्यक्ति में मानवीयतापूर्ण जीवन को स्थापित करना
- हर परिवार में भौतिक समृद्धी (से सुख - शांति)
  - [हुनर, तकनीकी से समृद्धी]
- समाज में अभय (से सुख - शान्ति - संतोष)
  - [मानव संबंधों की पहचान, विश्वास]
  - [समस्त प्रकार के वर्ग भावनाएं मानव चेतना में परिवर्तन होना] = **अखण्ड समाज**
- प्रकृति में संतुलन, सह-अस्तित्व (से सुख - शान्ति - संतोष - आनंद)
  - [चारों अवस्थाओं में संतुलन] = **सार्वभौम व्यवस्था**

उपरोक्त पूरा होने से निम्नलिखित उद्देश्य पूरे होते हैं:

3.3) मानवीयता के अक्षुण्णता हेतु, मानवीय संस्कृति, सभ्यता तथा उसकी स्थापना एवं संरक्षण हेतु विधी एवं व्यवस्था का अध्ययन है। इससे मानव के चारो आयामों (व्यवसाय, व्यवहार, विचार, अनुभव[समझ]) तथा पांचो स्थितियों (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्र) में एक सूत्रता, तात्मयता, सामरस्यता प्रत्यक्ष हो

3.4) उपरोक्त के क्रम में ही:

- भ्रम मुक्ति
- अपराध मुक्ति
- अपना-पराया के दीवाल से मुक्ति होता है

4) चेतना विकास मूल्य शिक्षा का तात्पर्य (परिभाषा क्या है?)

- **चेतना**: मानव में 'जीव चेतना' (भ्रमित स्तिथि), मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना - ऐसे चार स्तर में जागृति की स्थिती को पहचाना गया है | चेतना = ज्ञान, विवेक विज्ञान सम्पन्नता |
- **विकास**: मानव में उपरोक्त वर्णित चेतना के चार स्तरों में उत्तरोत्तर गुणात्मक परिवर्तन। ज्ञान (समझ, समझदारी) पूर्वक ही चेतना विकास संभव है।
- **मूल्य**: भागीदारी, प्रयोजन। प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता ही मूल्य है| मानव ज्ञान (समझ) पूर्वक ही अस्तित्व में, चारों अवस्थाओं के साथ अपने मूल्य (प्रयोजन, भागीदारी) को जान पाता हैं, एवं सम्पूर्ण संबंधों का निर्वाह कर पाता है। 'जीवन मूल्य', 'संबंध मूल्य', 'वस्तु मूल्य', 'मानव मूल्य' के रूप में ३० मूल्यों को पहचाना गया है - जो सार्वभौम सिद्ध हुए हैं। यही सुख-स्वरुप, जीने की कला है।
- **शिक्षा**: शिष्टता पूर्ण दृष्टि की उदय की प्रक्रिया। अस्तित्व में जीवन सहज मूल्य, मानव मूल्य, व्यवसाय मूल्य, स्थापित मूल्य, एवं शिष्ट मूल्य के प्रति निर्भ्रम जानकारी सहित व्यवसाय, व्यवहार चेतना की प्ररिष्कृति ही शिक्षा है।

5) शिक्षा का पाठ्यक्रमः (अध्ययन की वस्तु – क्या समझना है?)

अस्तित्व एवं मानव से सम्बंधित सम्पूर्ण दिशा, कोण, आयाम, परिप्रेक्ष्य से सम्बंधित समझ एवं जीने की कला:

- **स्वयं का अध्ययन, समझ**
  - चैतन्य इकाई (जीवन), एवं जीवन में:
    - कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता
    - ५ बल, ५ शक्तियां (मन, वृत्ति इत्यादी एवं आशा, विचार, इच्छा इत्यादी)
    - १० क्रियाएँः आस्वादन-चयन, तुलन-विश्लेषण, चिंतन-चित्रण, बोध-संकल्प, अनुभव-प्रमाणिकता
- **मानव संबंधों का अध्ययन, समझ**
  - परिवार एवं परिवार व्यवस्था में ७ मानव संबंध (माता-पिता, गुरु-शिष्य, मित्र-मित्र, साथी-सहयोगी..इत्यादी) एवं १८ मूल्य (विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, श्रद्धा, कृतज्ञता, वात्सल्य..इत्यादी)। इसी क्रम में परस्पर मानव संबंधों में पूरकता, तृप्ति को 'न्याय' के रूप में पहचान
  - प्रत्येक मानव में जीवन सामान, लक्ष्य एक, कार्यक्रम एक, स्वभाव एक, धर्म एक की समझः समाज में अखंडता एवं व्यवस्था की सार्वभौमता = मानव का व्यवस्था में होने, रहने का स्वरुप
- **शेष-प्रकृति (नैसर्गिक) संबंधों का अध्ययन, समझ**
  - मनुष्येत्तर प्रकृति - यथा पदार्थ, प्राण, जीव अवस्थाओं के साथ संबंध। प्राकृतिक नियम का समझ। इनके साथ भागीदारी मूल्यों के रूप में है
  - शेष ३ अवस्थाओं में नियम, नियंत्रण, संतुलन, उनमे अंतर्संबंध, व्यवस्था स्पष्ट होना
- **सम्पूर्ण अस्तित्व (सहअस्तित्व) का अध्ययन, समझ**
  - प्रकृति (४ अवस्थाः पदार्थ, प्राण, जीव, मानव) के साथ व्यापक वस्तु का 'ऊर्जा' के रूप में समझ।
  - इकाई एवं 'व्यापक वस्तु' का संबंध स्पष्ट होना - 'सह-अस्तित्व' (सत्यता) स्पष्ट होना

उपरोक्त पूरा होने से, होने के क्रम में:

- ज्ञान-विवेक-विज्ञान पूरा होना

- ❖ जीने की कला मानवीय आचरण रूप में पूरा होना:
- ❖ तकनीकी पूरा होना - परिवार की भौतिक आवश्यकताओं से अधिक उत्पादन के लिए, समाज गति के लिए हुनर, जानकारी। अन्य आवश्यक सूचना |

उपरोक्त क्रम में ही शिक्षा के रूप 'विकल्प' निम्नानुसार प्रस्तावित है:

- ❖ प्रचलन में 'रहस्यात्मक आध्यात्मवाद' के स्थान पर 'अनुभवात्मक आध्यात्मवाद' का अध्ययन
- ❖ प्रचलन में 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद' के स्थान पर 'समाधानात्मक भौतिकवाद' का अध्ययन
- ❖ प्रचलन में 'संघर्षात्मक जनवाद' के स्थान पर 'व्यवहारात्मक जनवाद' का अध्ययन
- ❖ प्रचलन में 'लाभोन्मादी अर्थशास्त्र' के स्थान पर 'आवर्तनशील अर्थशास्त्र' का अध्ययन,
- ❖ प्रचलन में 'भोगोन्मादी समाजशास्त्र' के स्थान पर व्यवहारवादी समाजशास्त्र का अध्ययन
- ❖ प्रचलन में 'कामोन्मादी मनोविज्ञान' के स्थान पर 'मानव संचेतानावादी मनोविज्ञान' का अध्ययन

उपरोक्त वाद (विचार) एवं शास्त्र (जीने के लिए प्रेरणा, स्वरुप) के आधार स्वरुप में दर्शन चार भाग में है: व्यवहार दर्शन, कर्म दर्शन, अनुभव दर्शन एवं अभ्यास दर्शन। इसके अलावा मानव आचार संहिता रूपी मानवीय संविधान - सूत्र व्याख्या अध्ययन के लिए प्रस्तुत है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में कक्षा १ से १० तक के पाठ्यपुस्तक तैयार हो चुके हैं|

6) शिक्षा की पद्धति: (अध्ययन विधी: कैसे समझें?)

<u>परिचय:</u>

प्रत्येक मानव सच्चाई को समझना चाहता हैं, समझ सकता है। ज्ञान, अथवा समझ, मानव की मूलभूत आवश्यकता है। मानव को 'ज्ञान अवस्था' की इकाई के रूप में पहचाना गया है।

शिक्षा का लक्ष्य मानव में चेतना विकास (जाग्रति) को सुनिश्चित करना ही है। जागृति से ही मानव सुखी होता है। जागृति से ही सार्वभौम मानव लक्ष्य, अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था संभव है।

<u>अर्थ-बोध होना:</u>

शिक्षा में प्रमुख रूप में भाषा का प्रयोग होता है। सार्थक भाषा का अर्थ होता हैं, जो मानव जीवन (मानव का चैतन्य पक्ष) के कल्पना में आता है। यह अर्थ अस्तित्व में किसी वास्तविकता को, सच्चाई को इंगित करता हैं। शब्द को ध्यान से सुनने पर यह अर्थ प्रत्येक व्यक्ति के कल्पना में आता है, स्वीकार होता हैं, एवं इसपर मनन करने के क्रम में वस्तु (वास्तविकता) स्वयं के अधिकार में समझ में आती है, वास्तविकताओं का बोध होता है|

अभ्यास-अध्ययन क्रम में, सच्चाईयां सर्वप्रथम विचार के आयाम (कल्पनाशीलता) में शब्द सहित सहज-स्वीकृत होती हैं, इसके अनुरूप व्यवहार, व्यवसाय में जीने के क्रम में यह समझ (अनुभव-आयाम) में परिवर्तित होते जाता है | इस प्रकार क्रमिक रूप में गुणात्मक परिवर्तन होता हैं, एवं मानव के जीने के चारों आयाम (व्यवसाय, व्यवहार, विचार, अनुभव[समझ] पूरे होते हैं) | इस विधी से मात्र शब्द, स्मरण के आधार पर जीने के स्थान पर, समझ (बोध, अनुभव) पूर्वक जीने की व्यवस्था है| प्रत्येक मानव के साथ यह हो सकता है, होता हैं, क्योंकि सच्चाई सभी के लिए एक ही होता है|

इस शिक्षा विधी से समझ (ज्ञान) एवं संस्कार संपन्न होने पर मानव में चेतना विकास होता है, जागृत होते हैं, जिससे समधानित एवं सुखी होते हैं।

<u>बाल्य अवस्था से शिक्षा:</u>

बच्चे जन्म से ही: न्याय चाहते हैं, सही कार्य-व्यवहार करना चाहते हैं, सत्य बोलते हैं, बोलना चाहते हैं। शिक्षा का उद्देश्य:

- उनमे न्याय पूर्वक जीने की क्षमता प्रदान करना (मानवीय संबंधों में पूरकता पहचान, उनका निर्वाह)
- सही कार्य-व्यवहार करने की क्षमता प्रदान करना
- सत्य, सच्चाइयों का बोध कराना है

बच्चों में जन्म से युवा अवस्था तक क्रम से अनुकरण (देख के करना), अनुसरण (सोच के करना), अनुशासन (समझ के करना) प्रवृत्तियां दिखती हैं। इस अध्ययन विधी से प्रत्येक बालक, युवा, प्रौढ़ व्यक्ति सच्चाईयों को अपने अधिकार पर समझ सकते हैं - जिससे वे स्वयं उस सच्चाई, उस वास्तविकता के प्रति आश्वस्त हो पाते हैं, यह उनके स्वत्व के रूप में होता हैं, वे स्वयं उसके अधिकारी हो जाते हैं|

- इस ढंग से यह सम्पूर्ण प्रक्रिया मानव सहज, जीवन (चैतन्य इकाई) सहज है, यह सभी प्रकार के भय, प्रलोभन, आस्था से मुक्त है| इस शिक्षा व्यवस्था में प्रयोग, व्यवहार एवं अनुभव पूर्वक सिद्ध होने वाली शिक्षा प्रणाली है (क्रमश *#7* देखें)

7) प्राप्त ज्ञान (शिक्षा) व्यवहारगम्य होने का प्रमाण: (समझने का फलन?)

प्रस्तावित शिक्षा में पारंगत व्यक्ति में निम्न गुणों को देखा जा सकता है:

- स्वयं के प्रति विश्वास अर्थात भयमुक्त होकर जीना
- मानव में श्रेष्टता के प्रति सम्मान
- स्वयं की प्रतिभा (समझ) स्वयं के व्यक्तित्व (जीने) के प्रति विश्वास अर्थात समझ के अनुरूप जीने के प्रति विश्वास
- व्यवहार में सामाजिक होना: सम्पूर्ण संबंधों एवं संपर्कों का निर्वाह
- व्यवसाय में स्वावलंबी होना

इसी को प्रमाण विधी से देखने पर:

- **अनुभव प्रमाण**
    - अपने समझ को दूसरों तक पहुंचा पाते हैं, समझा पाते हैं, बोध करा पाते हैं
- **व्यवहार प्रमाण** (आचरण): मानवीयतापूर्ण आचरण सम्पन्नता:
    - मानव के साथ संबधों की पहचान, मूल्य निर्वाह (न्याय); शेष प्रकृति के साथ संबंध को पहचानना, निर्वाह करना ।
    - चरित्र - स्वधन (स्वावलंबन, प्रतिफल, परितोष, पुरस्कार से प्राप्त धन), स्वनारी/स्वपुरुष (दाम्स्ती जीवन के सीमा में जीना), दयापूर्ण कार्य व्यवहार (पूरकता की पहचान, निर्वाह)
    - समाधान, समृधी, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीना
- **प्रयोग प्रमाण**
    - भौतिक-रासायनिक वस्तु के साथ तकनीकी का क्रियान्वयन

८) इस शिक्षा का आधार (इसे कैसे जांचे?)

इस ज्ञान (समझ) का आधार अस्तित्व में पाए जाने वाले वास्तविकताएं है, जो प्रत्येक मानव के लिए एक जैसे ही होते है, यह सर्व मानव को सहज-स्वीकार होते हैं| इसे जांचने की विधी:

- **सार्वभौम हैं:**
    - वास्तविकताओं पर आधारित है, इसीलिए सभी के लिए एक जैसा है। कोई मान्यता नहीं है। सभी के लिए सहजता से स्वीकार होता है, जांचने, समझ में आता है। निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण पूर्वक समझा जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है।
- **सार्वकालिक है:**
    - वास्तविकता पर आधारित है, इसीलिए सभी काल में एक जैसा है - देश कालातीत है, समय के साथ अपरिवर्तनीय है।
- **जीने में आता है:**
    - प्रस्तावित समझ जीने में प्रमाण रूप में बहता है
- **अध्ययनगम्य है:**
    - समझा सकते हैं, शिक्षा की वस्तु है। कोई रहस्य नहीं है।

इस जांचने-शोध करने के क्रम में अध्ययन (क्रमश#6 देखें) एवं पारंगत होने से जीने में प्रमाणित होता है (क्रमश #७ देखें)

9) परिणाम (आज तक क्या प्रगति हुई है?)

उपरोक्त वर्णित शिक्षा, अभ्यास, अध्ययन को लेकर सैकडो लोग आज देश भर में विभिन्न आयामों में प्रयास कर रहे हैं, इसमें सफलता प्राप्त हई है। सर्वप्रथम, इसमें

- **स्वयं में समाधान**
    - प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रस्ताव सहजता से स्वीकार होता है, इसमें कोई बाह्य भय, प्रलोभन, आस्था का सहारा नहीं लेना पड़ता है, यह स्पष्ट हो चुका है।
    - अभ्यास-अध्ययन क्रम में ही सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान न्यूनतम विचार रूप में स्पष्ट हो जाते है, जिससे एक स्थिरता, ऊर्जा एवं अटूट विश्वास उजागर हुआ है। यह अपने में उत्सवित होने का कारण बना है। इस विचार (कल्पनाशीलता के सीमा में

स्वीकृति) को समझ (बोध, अनुभव सम्पन्नता)में परिवर्तित करने का क्रम भी उत्साह जनक है, जो स्वयं स्फूर्त विधी से हो रहा है - इसमें किसी भी भय, प्रलोभन अथवा आस्था का पुट नहीं है। जितना समझे हैं, वह स्वयं में निरंतर बना है (मिटता नहीं), निश्चित है (विकल्प नहीं), एवं सार्वभौम है (सभी के लिए है, यही सत्य है) - ऐसा स्वयं में पहचानना संभव हो चुका है

- **परिवार में - न्याय, समृद्धी**
    - परिवार में पूरकता पहचान, दायित्वों, कर्तव्यों का वहन, इसका सुख, एवं इसमें शेष प्रयास के लिए उत्साह बना है।
    - परिवार में श्रम से समृद्धी के लिए कई प्रयोग, अभ्यास, जारी हैं, इसमें सफलताएं प्राप्त हुई हैं
- **समाज में अभय, विश्वास**
    - प्रत्येक मानव के साथ संबंध को पहचानना, मानव जाति एक है (शरीर के आधार पर), मानव धर्म एक है (समझ, समाधान के आधार पर), इसका इच्छा-विचार, समझ रूप में स्वीकृति, अभ्यास-अध्ययन क्रम में आश्वस्ति हुई है
    - अखंड समाजः परस्पर मानवों के बीच विश्वास, इसकी आवश्यकता प्रबल हुई है। सामाजिक नियम (स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार) की औचित्यता स्पष्ट होना
- **प्रकृति में संतुलन**
    - चारों अवस्थाओं में संतुलन - यथा, पदार्थ, प्राण, जीव एवं मानवों में सहअस्तित्व, सार्वभौम व्यवस्था की अवधारणा की औचित्यता स्पष्ट हुई है। प्राकृतिक नियम की स्वीकृति, इसके अर्थ में प्रयोग, प्रयास, सफलताएं प्राप्त हुए हैं।

इस प्रकार हमें सार्वभौम मानव लक्ष्य के प्रत्येक आयाम में गति, सफलता स्वयं में दिकता है, एवं प्रत्येक नर-नारी ऐसे जी सकते हैं, ऐसा विश्वास एवं कामना बना है। इस सार्वभौम मानव लक्ष्य के पूर्ती में ही एक से लेकर अनेक तक का सुख है, कल्याण है एवं शिक्षा विधी से ही यह संभव है - यह स्पष्ट है। जितने भी व्यक्ति इस प्रक्रिया से गुजरे हैं, गुजर रहे हैं इसे एक सहज, सुखद प्रक्रिया के रूप में पाते हैं।

स्वयं में प्राप्त उपरोक्त प्रगति के आधार पर इस शिक्षा हेतु एक विघालय, देश के विभिन्न स्थानों में अनेक अध्ययन केंद्र, तकनीकी शिक्षा में मूल्य शिक्षा का समावेश, इत्यादि का प्रारंभ हुआ है, जिसका वर्णन आगे दीये हैं|

10) योजना (आगे क्या करना क्या है?)

इस समझ के लोकव्यापीकरण हेतु योजना को ३ आयाम में रखा हैं, जिसका विस्तार अगले लेख में दिया है:

I. शिक्षा-संस्कार योजना – बाल्य अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक की शिक्षा व्यवस्था
II. लोक-शिक्षा योजना – प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए जीवन विधा परिचय शिविर, अध्ययन शिविर
III. परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था – ५ आयामी कार्यक्रम

इसी सिलसिले में इस समझ, ज्ञान के लोकव्यापीकरण को सुनिश्चित करने हेतु अनेक लोग प्रयास में लगे हैं, जिसका वर्णन इसके आगे दिया है।

** इस लेख में प्रयुक्त अवधारणाएं, एवं परिभाषाओं का स्त्रोत मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद है। मै स्वयं को मध्यस्थ दर्शन के माध्यम से वास्तविकताओं को समझने, के अनुरूप जीने के अभ्यास-अध्ययन क्रम में ही पाता हूँ एवं इस लेख के लिए जिम्मेदारी स्वीकारता हूँ।*